सौर पुराण[1] में शिवतत्त्व

सौर पुराण उपपुराणों की श्रेणी में आता है। इसे सूर्य पुराण भी कहा जाता है। इस पुराण के वक्ता सूर्यदेव हैं। इस पुराण के प्रमुख देवता भगवान् शिव हैं। अतः इसे एक शैव-उपपुराण माना जाता है।

भगवान् शिव का स्वरूप

सूर्यदेव अपने पुत्र मनु के इस प्रकार प्रश्न करने पर कि-ये समस्त ब्रह्मादि देवता किसमें स्थित हैं? किसमें लय को प्राप्त होते हैं? वह कौन सा सर्वश्रेष्ठ तत्त्व है जिसका प्रतिपादन वेदों में हुआ है? उत्तर देते हैं कि-एकमात्र अद्वय भगवान् शिव ही ब्रह्मा, विष्णु आदि देवों के रूप में भाँति-भाँति की लीला करते हैं। एकमात्र परमात्मा शिव ही सबके आदि कर्त्ता हैं जिसे वेदों में इन्द्र, मित्र आदि कहा गया है। उनसे न तो कोई महान् है और न ही सूक्ष्म, उन महात्मा शंकर से यह सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है। अर्थात् वे ही सम्पूर्ण जगत् के रूप में व्यक्त हैं। वे एक, सत्यस्वरूप तथा सर्वश्रेष्ठ हैं। रुद्रदेव से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं है। उसी से समस्त देव उत्पन्न होते हैं तथा उसी में विलीन या लय को प्राप्त होते हैं।

एकोऽपि बहुधा भाति लीलया केवलः शिवः।
ब्रह्मविष्ण्वादिरूपेण देवदेवो महेश्वरः।।

.....

तमेकं परमात्मानमादिकर्तारमीश्वरम्।
प्राहुर्बहुविधं तज्ज्ञा इन्द्रं मित्र इति श्रुतिः।।
न तस्मादधिकः कश्चिन्नाणीयानपि कश्चन।
तेनेदमखिलं पूर्णं शङ्करेण महात्मना।।
शृण्वन्तु देवताः सर्वाः सत्यमस्मद्वचः परम्।
नास्ति रुद्रान्महादेवादधिकं दैवतं परम्।। (सौ. पु. 2/4, 7, 8, 34)

एक स्थल पर ब्रह्माजी ने शिव की स्तुति में उन्हें देवों के देव, ईश्वर, परमब्रह्म, शान्त, परमेष्ठी, निष्कल, पुरुष, अक्षर, परंज्योति, ॐकार, परमेश्वर, अनन्त, परमपुरुष, प्रधान तथा प्रकृति आदि कहा है।

त्वमीश्वरो महादेवः परं ब्रह्म महेश्वरः।
परमेष्ठी शिवः शान्तः पुरुषो निष्कलो हरः।।
त्वमक्षरं परं ज्योतिरोंकारः परमेश्वरः।
त्वमेव पुरुषोऽनन्तः प्रधानं प्रकृतिस्तथा।। (सौ. पु. 23/31-32)

भगवान् शिव सभी के जन्मादि के कारण हैं तथा वे ब्रह्मा एवं विष्णु के भी कारण और उनके पूर्वज हैं।(सौ. पु. 38/16)

---

1. प्रस्तुत निबंध 1986 में नाग पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित 'सौरपुराणम्', जो श्रीकाशीनाथ शास्त्रि द्वारा संशोधित है, पर आधारित है।

शिवविवाह से पहले शिव के पास आनेवाले वाराती देवगण भगवान् शिव को इस रूप में देखते हैं–वे नीले कण्ठ से युक्त, तीन नेत्रोंवाले, चारों ओर मुखवाले, करोड़ों सूर्य की आभावाले, जगत् के आनंददाता, उत्पत्ति, स्थिति तथा संहारकर्त्ता, अनुग्रहकर्त्ता, अप्रमेय, आकाररहित, सभी ओर हाथ पैर, आँख, शिर तथा कानवाले, सम्पूर्ण लोकों को व्याप्त करके स्थित, देव और असुरों द्वारा वन्दित तथा मुमुक्षुओं द्वारा ध्यायित हैं।

नीलकण्ठं त्रिनेत्रं च शूलिनं सर्वतोमुखम्।
कोटिसूर्यप्रतीकाशं जगदानन्दकारिणम्।।
जगदुत्पत्तिसंहारस्थित्यनुग्रहकारिणम्।
अप्रमेयमनाकारमप्रपञ्चमनाकुलम्।।
सर्वतः पाणिपादान्तं सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य संस्थितम्।।
सुरासुरैर्वन्द्यमानं ध्यायमानं मुमुक्षुभिः।
इदं रूपं समालोक्य देवदेवस्य शूलिनः।। (सौ. पु. 57/23, 25, 27-28)

उपरोक्त सभी सन्दर्भों से यह स्पष्ट है कि भगवान् शिव ही परब्रह्म हैं जिनके निष्कल एवं सकल(निर्गुण एवं सगुण) दो रूप हैं। वे ही ब्रह्मा, विष्णु तथा समग्र सृष्टि के कर्त्ता, धर्त्ता तथा संहर्त्ता हैं। वह नीलकण्ठी, त्रिनेत्रधारी तथा चारों दिशाओं में मुखवाला है। उस एक ब्रह्म को ही वेदों में इन्द्र, मित्र आदि नामों से पुकारा जाता है। वह अनुग्रहकर्त्ता तथा लोगों को सुख प्रदान करनेवाला है। उस महादेव से कोई भी महान् नहीं है और न ही श्रेष्ठ। इस प्रकार इस पुराण के अनुसार भगवान् शिव ही परमतत्त्व हैं जिनसे समस्त प्रकृति, पुरुष तथा देवों की सृष्टि होती है, वे ही जगत् के आदि कर्त्ता हैं। सम्पूर्ण विश्व ही उनका स्वरूप है।

शिवोपासना

भगवान् शिव की उपासना सभी लोग करते हैं–चाहे वे देव हों या दानव या मानव या कोई अन्य। उदाहरण के लिये भगवान् विष्णु ने शिवाराधन से सुदर्शन चक्र प्राप्त किया(अध्याय 41) तथा राजा श्वेत ने मृत्यु को जीता(अध्याय 69)। ब्रह्मा को वेदों का ज्ञान प्राप्त होना तथा विष्णु का सर्वपूज्य होना(अध्याय 66) शिवोपासना का ही परिणाम है। भगवान् शिव शीघ्र प्रसन्न होनेवाले देव हैं। शिवभक्ति की इतनी महिमा है कि दम्भपूर्वक किये जानेपर भी संसार से मुक्ति हो जाती है। अगर कोई प्रेमपूर्वक भक्ति करे तो उसका क्या पूछना। भगवान् शिव कहते हैं कि मेरी भक्ति भवबन्धन से छुड़ानेवाली होती है। भक्ति से सुगमतापूर्वक मैं प्राप्य हूँ। अतः मेरी भक्ति का अनुसरण करना चाहिये।

येऽपि दम्भं समाश्रित्य भक्तानामुपजीविकाः।

संसारात्तेऽपि मुच्यन्ते किं पुनर्मत्परा जनाः।।
मयि भक्तिः सदा कार्या भवपाशविमोचनी।
भक्तिगम्यस्त्वहं वत्स मम योगो हि दुर्लभः।। (सौ. पु. 11/10, 22)

एक स्थल पर सूतजी ऋषियों से कहते हैं कि भगवान् शंकर से परे या श्रेष्ठ न कोई धर्म है, न अर्थ, न सुख और न मोक्ष ही। अर्थात् भगवान् शंकर की प्राप्ति चारों पुरुषार्थों से श्रेष्ठ है। उन्हें प्राप्त कर लेने पर कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता।

नास्ति शभ्भोः परो धर्मो नास्त्यर्थः शंकरात्परः।
शिवादन्यत्सुखं नास्ति मोक्षो नैव हरात्परः।। (सौ. पु. 38/3)

भगवान् शिव का अच्छी प्रकार किया गया भजन या स्मरण कष्टों का नाश करनेवाला है। भक्तिपूर्वक सतत या प्रतिदिन शिव की पूजा करने से व्यक्ति को आत्मोपलब्धि हो जाती है।

सकृत्संस्मरणाच्छंभोर्नश्यन्ति क्लेशसंचयाः।
शिवं संपूजयेन्नित्यं भक्तिमात्मोपलब्धये। (सौ. पु. 46/40, 42)

भगवान् शिव की पूजा से सभी देवों की पूजा सम्पन्न हो जाती है क्योंकि वे सर्वदेवमय हैं; वे ही सभी देवों के रूप में व्यक्त हो रहे हैं।

पूजिते सर्वदेवेशे सर्वदेवनमस्कृते।
पूजिताः सर्वदेवाः स्युर्यतोऽसौ सवर्गो विभुः।। (सौ. पु. 47/31)

शिवभक्ति की यह महिमा है कि यदि वह श्वपच में भी हो तो वह श्रेष्ठ मुनि है तथा वह द्विजों से भी बढ़कर है। परन्तु शिवभक्तिविहीन द्विज भी श्वपच अर्थात् शूद्र से भी नीच है।

श्वपचोऽपि मुनिश्रेष्ठाः शिवभक्तो द्विजाधिकः।
शिवभक्तिविहीनस्तु द्विजोऽपि श्वपचाधमः।। (सौ. पु. 47/43)

नारदजी से ब्रह्माजी शिवभक्ति की महिमा के सन्दर्भ में कहते हैं कि शुभाशुभ कर्मों के ढेर को भगवान् शिव की उपासना उसी प्रकार जला देती है जिस प्रकार ईंधन को अग्नि। शिवभक्ति से भावित म्लेच्छ की समानता न तो चारों वेदों को जाननेवाला और न ही अग्निष्टोम आदि यज्ञ करनेवाला ही कर सकता है। संसाररूपी सर्प से डरे हुए व्यक्ति को मुक्त करनेवाले महादेवजी हैं – ऐसा वेद कहते हैं। जिनकी लेशमात्र कृपा से ब्रह्मा को ब्रह्मत्व की प्राप्ति हो जाती है तथा विष्णु को विष्णुत्व की, उस शिव की आराधना क्यों नहीं करते? शिव के निमित्त दान, होम, स्नान तथा जप का अक्षय फल होता है – ऐसा स्वयं भगवान् शिव ने कहा है।

शुभानामशुभानां च कर्मणां राशिसंचयम्।
करोति भस्मसाद्भक्तिर्भवस्याग्निर्यथेन्धनम्।।
म्लेच्छोऽपि वा यदि भवेद्भवभक्तिसमन्वितः।

न तत्समश्चतुर्वेदी नाग्निष्टोमायिज्ञकृत्।।
भवव्यालमुखस्थानां भीरूणां देहिनां मुने।
तस्माद्विमोचकस्तेषां महादेव इति श्रुतिः।।
यस्य प्रसादलेशेन ब्रह्मत्वं प्राप्तवानहम्।
विष्णुत्वमपि विष्णुश्च स शिवः कैर्न सेव्यते।।
शिवे दानं शिवे होमः शिवे स्नानं शिवे जपः।
अक्षयानि फलान्येषामित्याह भगवाञ्छिवः।। (सौ. पु. 64/14-15, 21, 26-27)

परमानन्द के विग्रह तथा गुणों के धाम केवल भगवान् शिव के ध्यान से व्यक्ति कैवल्य को प्राप्त हो सकता है, किसी अन्य के ध्यान से नहीं। मोहपाश में बँधे लोगों के मोह का नाश उमापति के स्मरण से ही होता है-ऐसा वेदों का कथन है। ज्योतिस्वरूप जो परमब्रह्म है, जो अक्षर एवं अव्यय है तथा जो सर्वग्राही है, उस भगवान् शिव की शरण लेनी चाहिये। जिनके दर्शन की आकांक्षा भगवान् विष्णु तथा ब्रह्मादि देवता करते हैं तथा योगीजन जिन्हें अपनी आत्मा में दर्शन करना चाहते हैं उन भगवान् शंकर की शरण लेनी चाहिये। क्षण अथवा मुहूर्तमात्र के स्मरण, ध्यान अथवा पूजा से महेश्वर शीघ्र ही कैवल्य प्रदान करते हैं अतः उस महेश्वर की उपासना करनी चाहिये।(सौ. पु. 32/12-14, 19, 24)

अस्त्यनन्तगुणावासः परानन्दैकविग्रहः।
ध्यातः कैवल्यपदः पुंसां महादेवो न चापरः।।
मोहपाशनिबद्धानां महामोहात्मतां हरेत्।
स्मरणान्मोचकस्तेषामुमापतिरिति श्रुतिः।।
.....
दर्शनं तस्य काङ्क्षन्ते हरिब्रह्मादयः सुराः।
योगिनो नियतात्मानस्तमीशं शरणं व्रज।।
क्षणं मुहूर्तमथवा ध्यातः सम्पूजितः स्मृतः।
प्रददात्याशु कैवल्यं यस्तं भज महेश्वरम्।। (सौ. पु. 32/12-13, 19, 24)

भगवान् शिव की स्तुति में शिविरूप इन्द्र कहते हैं कि "भगवान् शंकर की कृपा की प्राप्ति जबतक नहीं होती तबतक जीव संसाररूपी गर्त में बार-बार गिरता रहता है।" अर्थात् भगवान् शिव की कृपादृष्टि के बिना आवागमन से मुक्ति नहीं मिलती।(सौ. पु. 32/43)

शिवभक्तों की इतनी महिमा बतायी गयी है कि उनके पूजन से साक्षात् भगवान् शिव पूजित हो जाते हैं। अतः शिव की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये उनके भक्तों का सम्मान एवं पूजन करना चाहिये। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र या अन्त्यज आदि सभी शिवभक्त सदा और सर्वत्र सभी अवस्थाओं में पूजा के योग्य हैं।

भक्तानां पूजनाच्छंभुः प्रीतो भवति नारद।।
यत्कृतं शिवभक्तानां तेन प्रीतो भवेच्छिवः।।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वाऽन्त्यजजातितः।।
शिवभक्तः सदा पूज्यः सर्वावस्थां गतोऽपि वा। (सौ. पु. 64/75-76, 41-42)

मुमुक्षु लोग अन्य सभी को छोड़कर एकमात्र निरंजन शिव का सदा ध्यानकर मुक्त हो जाते हैं।

मुमुक्षुभिः सदा ध्येयः शिव एको निरंजनः।
सर्वमन्यत्परित्यज्य भक्त एव विमुच्यते।। (सौ. पु. 2/9)

(1) भक्ति का महत्त्व

भगवान् शिव की प्राप्ति उनकी कृपा से ही हो सकती है न कि स्वप्रयास से। यद्यपि कृपा के लिये साधन करने की आवश्यकता होती है। भगवान् की कृपा उनके प्रति भाव रखने से ही प्राप्त की जा सकती है। बिना भाव से किया गया यज्ञ, दान, तप तथा ध्यान-सब निष्फल होते हैं। उमापति, जिनका वाचक प्रणव है, जो ज्ञानमूर्ति हैं, जिनका गान वेदों में हुआ है, उनकी कृपा के लेशमात्र से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

वाचकः प्रणवो यस्य ज्ञानमूर्तेरुमापतेः।
अनुग्रहं विना तस्य कथं जानाति शूलिनम्।।
एक एवेति यो रुद्रः सर्ववेदेषु गीयते।
तस्य प्रसादलेशेन मुक्तिर्भवति किंकरी।। (सौ. पु. 7/29-30)

भगवान् शिव को न दान से, न तप से न अश्वमेधादि यज्ञों से ही जाना जा सकता है। वे तो अनन्य भक्ति से ही जाने जाते हैं।

न दानैर्न तपोभिर्वा नाश्वमेधादिभिर्मखैः।
भक्त्यैवानन्यया राजंज्ञायते भगवान् शिवः।। (सौ. पु. 2/14)

भगवान् शिव स्कन्द के पूछने पर कि वे कैसे प्रसन्न होते हैं? कहते हैं कि "मैं न तप से, न दान से और न ही यज्ञ से प्रसन्न होता हूँ। मैं तो थोड़ी-सी भक्ति से सन्तुष्ट हो जाता हूँ। त्रिपुण्ड्रधारी, सदा शान्त रहनेवाला, अहंकाररहित, रुद्राक्ष धारण करनेवाला सत्य संकल्प भक्त मेरे लिये उत्तम है।"

नाहं प्रसन्नस्तपसा न दानेन न चेज्यया।।
तुष्टोऽहं भक्तिलेशेन क्षिप्रं यच्छे परं पदम्।
त्रिपुण्ड्रधारी सततं शान्तो रुद्राक्षकंकणः।।
निर्दम्भः सत्यसंकल्पो भक्तः स्यादुत्तमो मम। (सौ. पु. 11/6-8)

(2) शिवनाम एवं पंचाक्षर – मन्त्र की महिमा

शिव का यज्ञ में भाग न देखकर ब्रह्माजी दक्ष प्रजापति से कहते हैं कि जिन्हें (शिव को) वेद पशुओं (जीवों) का मोचक (छुटकारा दिलानेवाला) कहता है, उनका नामस्मरण करने मात्र से पापों के पंजर नष्ट हो जाते हैं।

स एव मोचको देवः पशुनां न इतिश्रुतिः।
नामसंकीर्तनाद्यस्य भिद्यते पापपञ्जरम्।। (सौ. पु. 7/24)

वहीं पर आगे कहा गया है कि किसी भी प्रसंग से – कौतुहल, लोभ, भय या अज्ञान से यदि किसी व्यक्ति द्वारा 'हर' शब्द का उच्चारण कर लिया जाय तो उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्रसङ्गात्कौतुकाल्लोभाद्भयादज्ञानतोऽपि वा।
हर इत्युच्चरन्मर्त्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। (सौ. पु. 7/31)

जीवन कभी भी समाप्त हो सकता है क्योंकि यह क्षणभंगुर है। अतः इस पुराण में नामजप की महिमा को बताते हुए कहा गया है कि यमपुरी की वृक्षावली निकट ही दिखलायी देती है, इसलिये शिव का स्मरण कर, शिव का ही ध्यान कर और शिव का ही सर्वकाल में चिन्तन कर। जो प्रमादवश 'शिव' इस दो अक्षर का उच्चारण नहीं करता वह अभागा तथा सोचनीय है।

निकटा एव दृश्यन्ते कृतान्तनगरद्रुमाः।
शिवं स्मर शिवं ध्याय शिवं चिन्तय सर्वदा।।
शोचन्ते ते परं हीना अभाग्याश्च दिने दिने।
प्रमादेनापि यैर्नोक्तं शिव इत्यक्षरद्वयम्।। (सौ. पु. 47/34, 28)

इस पुराण में पंचाक्षर मंत्र की बहुत ही महिमा बतायी गयी है। पंचाक्षर मंत्र (**नमः शिवाय**) के साथ पत्र – पुष्प आदि चढ़ाने का अनन्त फल बताया गया है। शिवमुख से निर्गत सात करोड़ महामन्त्र पंचाक्षर मन्त्र की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं हैं। दीक्षा – प्राप्त अथवा अदीक्षित वा विधिपूर्वक या अविधिपूर्वक पंचाक्षर मंत्र का जापक शिव के अनुचर या गण का पद प्राप्त कर लेता है। पंचाक्षर मंत्र तथा बिल्वपत्र से शिव की श्रद्धा से पूजा करने से व्यक्ति भगवान् शिव के पद को प्राप्त कर लेता है।

पञ्चाक्षरेण मन्त्रेण पत्रं पुष्पमथापि वा।
यः प्रयच्छति शर्वाय तदनन्तफलं सकृत्।।
सप्तकोटिमहामन्त्राः शिववक्त्राद्विनिर्गताः।
पञ्चाक्षरस्य मन्त्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।
दीक्षितोऽदीक्षितो वाऽपि विधानादन्यथाऽपि वा।
पञ्चाक्षरं जपेद्यस्तु शिवस्यानुचरो भवेत्।।

पञ्चाक्षरेण मन्त्रेण बिल्वपत्रैःशिवार्चनम्।
करोति श्रद्धया यस्तु स गच्छेदैश्वरं पदम्।। (सौ. पु. 65/1-3, 6)

(3) लिंगार्चन का महत्त्व

ब्रह्माजी नारद को लिंगार्चन की महिमा बताते हुए कहते हैं कि तीनों लोक में लिंगार्चन से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है। लिंगार्चन से समस्त विश्व की पूजा हो जाती है, इसमें कोई संशय नहीं है। माया से मोहित प्राणी महेश्वर को नहीं जानते (अर्थात् लिंगरूप महेश्वर के रहस्य को नहीं जानते)। हे नारद! शिवलिंग में सभी तीर्थों का निवास होता है इसलिये उसकी भक्तिभाव से नित्य पूजा करनी चाहिये।

नास्ति लिङ्गार्चनात्पुण्यमधिकं भुवनत्रये।
लिङ्गेऽर्चितेऽखिलं विश्वमर्चितं स्यान्न संशयः।
मायया मोहितात्मानो न जानन्ति महेश्वरम्।।
शिवलिङ्गे वसन्त्येव तानि सर्वाणि(तीर्थानि) नारद।
तस्माल्लिङ्गं सदा पूज्यं भक्तिभावेन नित्यशः। (सौ. पु. 64/30-31, 35)

भगवान् विष्णु से लिंगपूजा का महत्त्व बताते हुए भगवान् शिव ने कहा है कि मेरी लिंगमूर्ति की पूजा करो। लिंगार्चन से मैं अज्ञान का नाश कर देता हूँ। लिंगार्चन से किसी भी प्रकार का सांसारिक भय नहीं होता।

लिङ्गे मां पूजय हरे लिङ्गमूर्तिधरो ह्यहम्।
लिङ्गाराधनतः क्षिप्रमज्ञानं नाश्याम्यहम्।।
लिङ्गार्चनरतानां च नास्ति संसारजं भयम्।। (सौ. पु. 66/38-39)

(4) शिवपूजन संबंधी अन्य बातें

शिवमन्दिर में सेवाकर्म का भी महान् फल बताया गया है। शिवालय में झाड़ू- पोछा या कोई छोटा-मोटा कर्म भी पापात्मा व्यक्ति को नरक जाने से रोकता है।

व्याजेनापि हि ये कुर्युः किंचित्कर्म शिवालये।
न ते यान्तीह नरकं पापात्मानोऽपि मानवाः।। (सौ. पु. 48/26)

शिवपूजा में बिल्वपत्रादि का बड़ा महत्त्व है। इस पुराण में बिल्वपत्र के साथ-साथ बिल्व-वृक्ष की भी महिमा विस्तार से बतायी गयी है। इसमें कहा गया है कि बिल्ववृक्ष का दर्शन, स्पर्शन तथा पूजन एक दिन के किये पापों को नष्ट कर देता है।

दर्शनाब्दिल्ववृक्षस्य स्पर्शनाद्वन्दनादपि।
अहोरात्रकृतं पापं नश्यते ऋषिसत्तमः।। (सौ. पु. 65/7)

आगे कहा गया है कि भक्तिपूर्वक बिल्ववृक्ष के नीचे मौन रहकर रात्रिकालपर्यन्त शिवनाम

के जप से व्यक्ति सभी पापों से छूटकर शिव के परम पद को प्राप्त कर लेता है। ब्रह्माजी नारद से कहते हैं कि(भगवान् शिव को बिल्वपत्र इतने प्रिय हैं कि) अगर सूखे एवं बासी बिल्वपत्र से भी भगवान् शिव की पूजा की जाय तो सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है।

भक्त्या बिल्वदलैर्मौनी हरनाम जपेन्निशि।
सर्वपापविनिर्मुक्तो याति शैवं परं पदम्।।
शुष्कैः पर्युषितैः पत्रैरपि बिल्वस्य नारद।
पूजयेद्गिरिजानाथं मुच्यते सर्वपातकैः।। (सौ. पु. 65/12-13)

शिवपूजा में विहित और निषिद्ध पुष्पों का भी विवेचन इस पुराण में हुआ है। शिव की पूजा में बन्धूक, केतकी, कुन्द, जूही, मदन्तिका, शिरीष और अर्जुन के फूल नहीं चढ़ाना चाहिये।

बन्धूकं केतकीपुष्पं कुन्दयूथीमदन्तिकाः।
शिरीषं चार्जुनं पुष्पं प्रयत्नेन विवर्जयेत्।। (सौ. पु. 65/39)

कनक एवं कदंब के पुष्प रात में ही चढ़ाना चाहिये। एक हजार आक के फूलों से एक करवीर का फूल, एक हजार करवीर से एक बिल्वपत्र, एक हजार बिल्वपत्रों से एक शमी, एक हजार शमी-फूलों से एक कुशपुष्प, एक हजार कुशपुष्पों से एक पद्मपुष्प, एक हजार पद्मपुष्पों से एक बकपुष्प, एक हजार बकपुष्पों से एक धतूरे का फूल, एक हजार धतूरे के फूलों से एक वृहतपुष्प, एक हजार वृहतपुष्पों से एक द्रोणपुष्प, एक हजार द्रोणपुष्पों से एक अपामार्गपुष्प, एक हजार अपामार्गपुष्पों से एक नीलोत्पल तथा एक हजार नीलोत्पल से उसकी एक माला श्रेष्ठ होती है।(सौ. पु. 65/29-35)

पुनः जलज, उत्पल एवं चम्पक पुष्पों में कभी पर्युषित(बासी) होने का दोष नहीं होता(सौ. पु. 65/43)। इस पुराण में विभिन्न प्रकार के फूलों-फलों एवं धूप, नैवेद्यादि से शिवलिंग की पूजा से होनेवाले नाना प्रकार के फलों की भी चर्चा की गयी है। (सौ. पु. 65/43-82)

चण्ड द्वारा अधिकृत लिंगों का निर्माल्य(प्रसाद) सबके लिये ग्राह्य नहीं होता, अतः इस पुराण में ऐसे लिंगों के नाम बताये गये हैं जिनपर चण्ड का अधिकार नहीं होता। स्वयंभूलिंग(अर्थात् अपने आप प्रकट अर्थात् जो किसी द्वारा निर्मित न हो), बाणलिंग, रत्ननिर्मितलिंग, रस(पारे द्वारा)-निर्मित लिंग तथा सिद्धों द्वारा प्रतिष्ठित लिंग में चण्ड का अधिकार नहीं होता।(सौ. पु. 66/15)

शिवनिर्माल्य के धारण की प्रशंसा में कहा गया है कि शिव पादोदक(लिंग से गिरता जल) तथा निर्माल्य को(भक्तिपूर्वक) लेने के लिये प्रयत्न करना चाहिये। इसके धारण से मन, वाणी और कर्म से उत्पन्न पाप स्पर्श नहीं करते।

पादोदकं च निर्माल्यं भक्तैर्धार्यं प्रयत्नतः।
न तान्स्पृशन्ति पापानि मनोवाक्कायजान्यपि।। (सौ. पु. 66/16)

सभी तीर्थों में वाराणसी को उत्तम मानते हुए इस पुराण में कहा गया है कि "यह तीर्थों तथा क्षेत्रों में सर्वोत्तम तीर्थ व क्षेत्र है जो भगवान् शिव को अति प्रिय है।" वहाँपर स्वयं भगवान् शिव सभी देहधारियों को तारकज्ञान का उपदेश करते हैं जिससे वे संसार से मुक्त हो जाते हैं।

तीर्थानामुत्तमं तीर्थं क्षेत्राणां क्षेत्रमुत्तमम्।
वाराणसीतिनगरी प्रिया देवस्य शूलिनः।।
यत्र विश्वेश्वरो देवः सर्वेषामिह देहिनाम्।
ददाति तारकं ज्ञानं संसारान्मोचकं परम्।। (सौ. पु. 4/5-6)

इस पुराण में भगवान् शिव की सबसे महत्त्वपूर्ण स्तुति विष्णु द्वारा की गयी सहस्त्रनाम स्तुति है। भगवान् विष्णु ने भगवान् शिव की हजार नामों से स्तुति कर सुदर्शनचक्र को प्राप्त किया था। यह स्तुति यदा-कदा कुछ परिवर्तनों के साथ शिवपुराण[1] तथा लिंगपुराण[2] में वर्णित सहस्त्रनामों की स्तुतियों के समान ही है। सुदर्शनचक्र की प्राप्ति की कथा तथा सहस्त्रनाम स्तोत्र इस पुराण के अध्याय 41(श्लोक 12 से 140 तक) में उपलब्ध होता है। अन्यत्र इस पुस्तक में कुछ शिवपुराणोक्त तथा कुछ अन्य प्रकार के स्तोत्र भी दिये गये हैं। उक्त सहस्त्रनाम के पाठ से व्यक्ति को मनोवांछित फल प्राप्त होता है तथा अन्त में मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। इसीप्रकार अन्य स्तोत्रों के पाठ से भी व्यक्ति उत्तम फल प्राप्त करता है।

भगवान् शिव एवं विष्णु

सूतजी से ऋषि लोग एक बार यह पूछते हैं कि जिन भगवान् शिव से ब्रह्मा और विष्णु को अपना-अपना पद प्राप्त हुआ है उनको छोड़कर कुछ लोग केशव(विष्णु) के दास क्यों बनते हैं? यद्यपि भगवान् शिव विष्णु से पहले अस्तित्वमान हैं तब भी अन्तकाल में प्रायः करके लोग भगवान् गरुड़ध्वज को क्यों याद करते हैं?

केचिल्लोका महेशानं त्यक्त्वा केशवकिंकराः।
तत्र किं कारणं सूत वद संशयनाशक।।
अन्तकाले स्मरन्त्येव प्रायेण गरुडध्वजम्।
विद्यमाने शिवे विष्णोः प्रभौ श्रीपार्वतीपतौ।। (सौ. पु. 38/6-7)

इन प्रश्नों का सूतजी उत्तर देते हैं कि जब-जब(विभिन्न कल्पों में) भगवान् शिव विष्णु की भक्तिपूर्ण आराधना से प्रसन्न हुए तब-तब उन्होंने विष्णुजी को वरदान दिया कि उनसे (विष्णुजी से) परे तत्त्व को विरले ही लोग जान सकेंगे। इसी कारण से हे महर्षियों! कोई-कोई विरला ही शिव को जानता है और वरदान के प्रभाव से ही विष्णु के नाम का गुणगान प्रायः होता है। विष्णु के स्मरणमात्र से पाप का नाश हो जाता है, भगवान् शम्भु के प्रसाद से ही ऐसा है इसमें विचारने योग्य कोई बात नहीं है। शम्भु को तत्त्व से जाननेवाला तो केवल स्वयं नारायण हैं(अन्य कोई नहीं)।

1. शिव पुराण, कोटिरुद्रसंहिता अध्याय 35/श्लोक 2-132
2. लिंग पुराण, पूर्वभाग, अध्याय 98/श्लोक 27-159

यदा यदा प्रसन्नोऽभूद्भक्तिभावेन धूर्जटिः।
विष्णुनाऽऽराधितो भक्त्या तदाऽसौ दत्तवान्वरान्।।
त्वत्तः परं प्रभुं नैव प्रायेण ज्ञास्यति स्फुटम्।
विरलाः केचिदेतद्वै निष्ठां वेत्स्यन्ति तत्त्वतः।।
हेतुना तेन विप्रेन्द्राः शिवं जानन्ति केचन।
प्रायेण विष्णुनामानि गृणन्ति वरदानतः।।
विष्णोः स्मरणमात्रेण सर्वपापक्षयो भवेत्।
शम्भुप्रसाद एवैष नास्ति कार्या विचारणा।।
यः शम्भुं तत्त्वतो वेत्ति स तु नारायणः स्वयं। (सौ. पु. 38/8-12)

सूतजी आगे कहते हैं कि विष्णु एवं ब्रह्मा के आदि कारण एवं पूर्वज भगवान् शिव को विष्णुमाया से मोहित होने के कारण मूर्ख लोग नहीं जान पाते।

जन्मादिकारणं शम्भुं विष्णुं ब्रह्मादिपूर्वजम्।
न जानन्ति महामूर्खा विष्णुमायाविमोहिताः।। (सौ. पु. 38/16)

भगवान् विष्णु के पूज्य होने के कारण का उल्लेख एक अन्य स्थल पर भी मिलता है। ब्रह्माजी ने नारदजी को लिंगोत्पत्ति की कथा सुनाते हुए कहा था कि विष्णु एवं हमारे विवाद को निपटाने के बाद भगवान् शिव ने भगवान् विष्णु को सर्वपूज्य होने का तथा मुझे वेदों के ज्ञान का वरदान दिया था।

मत्प्रसादेन सर्वस्मादधिको भव माधव।
मद्भक्तानां त्वमेवाग्र्यः पूज्यो मान्यस्त्वमेव हि।। (सौ. पु. 66/37)

भावार्थ यह है कि "मेरी कृपा से तुम हम सबसे श्रेष्ठ बन जाओ। तुम मेरे भक्तों में भी पूज्य एवं मान्य होगे।"

उपरोक्त संदर्भों में यह कहा गया है कि भगवान् शिव के वरदान के प्रभाव से ही भगवान् विष्णु की पूजा या मान्यता ज्यादा प्रचलित है। भक्ति एवं भक्त की महिमा को बढ़ाने या समझाने के लिये ही इस प्रकार की शिवलीला हुई। भक्ति शास्त्रों में भी भक्त को भगवान् से बड़ा माना गया है।[1] इसी प्रकार भगवान् के नाम को भी भगवान् से बड़ा माना गया है। भगवान् विष्णु के परम शिवभक्त

1. उदाहरण के लिये रामचरितमानस के उस प्रसंग को लें जहाँपर श्रीराम शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश दे रहे हैं। भक्त को भगवान् से बड़ा मानना नवधा भक्ति का एक अंग है।

'मोतें संत अधिक करि लेखा' (मानस अरण्यका. 35/2)

भावार्थ हैं-संतों को मुझसे(राम से) अधिक करके मानना(सातवें प्रकार की भक्ति है)। शिव पुराण(रुद्र संहिता-सती खण्ड अध्याय 25) में भी श्रीविष्णु के पूज्य बनजाने की एक कथा का वर्णन है। वहाँ भी श्रीविष्णु की भक्ति को उनके पूज्य बन जाने का कारण बताया गया है।

होने का यही प्रमाण है कि उनकी भक्ति से प्रसन्न हो भगवान् शिव ने उन्हें उपरोक्त दुर्लभ वरदान दिया।

उपसंहार

इस शैव-उपपुराण में भगवान् शिव को ईश्वर, परमब्रह्म, निष्कल(निर्गुण), अक्षर, ॐकार, अनादि, अनन्त, परमपुरुष, परमेश्वर, प्रधान, सत्य, शान्त, परंज्योति, प्रकृति आदि कहा गया है। वही सबका कारण(यहाँतक कि ब्रह्मा एवं विष्णु का भी) तथा विश्वरूप है। वह अप्रमेय, उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कारण है। वह नीलकंठी तथा तीन नेत्रोंवाला तथा चारों ओर मुखवाला है। उसे ही वेदों में इन्द्र, मित्र आदि नामों से पुकारा जाता है। भगवान् शिव ही परमतत्त्व हैं। वे ही अनुग्रहकर्त्ता तथा लोक को सुख प्रदान करनेवाले हैं। उनसे न कोई महान् है और न ही श्रेष्ठ।

भगवान् शिव की भक्ति से ही व्यक्ति को कैवल्य नामक मुक्ति तथा भोगादि की प्राप्ति होती है। वे शीघ्र प्रसन्न होनेवाले हैं और वे भक्ति से (अन्य साधनों की अपेक्षा) सुगमतापूर्वक प्राप्य हैं, इसलिये उनकी ही भक्ति का अनुसरण करना चाहिये। पुनः भगवान् शिव सर्वदेवमय एवं सबके आदि कारण हैं, इसलिये उनकी उपासना से सभी की उपासना स्वतः ही हो जाती है। इस कारण से भगवान् शिव की ही उपासना करनी चाहिये।

भगवान् शिव की भक्ति से ही भगवान् विष्णु को सुदर्शनचक्र की प्राप्ति तथा सर्वपूज्य होने का वरदान मिला, ब्रह्मा को वेदों का ज्ञान तथा राजा श्वेत की मृत्यु पर विजय प्राप्त हुई थी।

भगवान् शिव तप, दान तथा यज्ञादि से प्राप्य नहीं हैं, वे तो भक्ति से या भाव से ही प्राप्य हैं। शिवनाम की महिमा को बताते हुए कहा गया है कि कौतुहल, लोभ, भय या अज्ञान-किसी भी प्रकार से 'हर' या 'शिव' शब्द का उच्चारण कर लिया जाय तो उससे सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार पंचाक्षर मंत्र(**नमः शिवाय**) के माहात्म्य को बतलाते हुए कहा गया है कि भगवान् शिवप्रसूत सात करोड़ मन्त्रों का यह शिरोमणि है। इस मन्त्र का विधिपूर्वक या अविधिपूर्वक-किसी प्रकार से भी जप करने पर भगवान् शिव के गण का पद तथा मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। बिल्वपत्र तथा इस मंत्र से श्रद्धापूर्वक भगवान् शिव की पूजा से शिवपद की प्राप्ति हो सकती है।

लिंगार्चन के महत्त्व को समझाते हुए कहा गया है कि लिंग में सभी तीर्थ निवास करते हैं तथा इसकी पूजा से सभी की पूजा हो जाती है, इसलिये सदैव लिंगार्चन करना चाहिये। इससे अज्ञान का नाश हो जाता है। फलस्वरूप संसारभय से मुक्ति मिल जाती है।

शिवमंदिर में झाड़ू-सफाई आदि छोटे कर्म भी व्यक्ति को नरक जाने से बचाते हैं। बिल्ववृक्ष तथा बेलपत्र की काफी महिमा बतायी गयी है। बिल्ववृक्ष के नीचे उपासना करना तथा बिल्वपत्र से शिवपूजा महती फलदायी है। बिल्वपत्र कभी बासी नहीं होता अतः इसके सूखे हुए पत्ते भी चढ़ाने पर शिव प्रसन्न हो पापों से मुक्त कर देते हैं।

शिवपूजा में विहित-निषिद्ध पुष्पों की सूची तथा उनसे पूजा करने के फल आदि को विस्तार से इस पुराण में बताया गया है। चंड के अधिकार से रहित शिवलिंगों के वर्णन के साथ शिवनिर्माल्यभक्षण की महिमा बतायी गयी है। इसी प्रकार वाराणसी तीर्थ की महिमा बताते हुए कहा गया है कि यह सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि भगवान् शिव स्वयं ही यहाँ मरनेवालों को तारक मंत्र का उपदेश करते हैं। इस पुराण में प्रसिद्ध शिवसहस्रनाम स्तोत्र, जो भगवान् विष्णु द्वारा प्रसूत है का भी वर्णन है जिसके नियमित जप से भोग एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अन्त में भगवान् विष्णु की व्यापकरूप में पूजा होने का कारण बताया गया है। विष्णु की भक्ति से प्रसन्न हो भगवान् शिव ने उन्हें सर्वपूज्य होने का वरदान दिया था। भगवान् शिव की इस प्रकार की लीला(जिसमें भक्त को भगवान् से भी बड़ा सिद्ध किया गया है) भक्ति की महत्ता को सिद्ध करने के लिये ही की गयी है।

ssssssss

तृष्णा की अजरता

जीर्यंति जीर्यतः केशाः दंता जीर्यंति जीर्यतः।
चक्षुःश्रोत्रे च जीर्येते तृष्णैका तरुणायते।। (नार. महापु. पूर्वखण्ड 35/21)

बुढ़ापे में केश एवं दाँत बूढ़े हो जाते हैं। समय के साथ आँख एवं कान भी जीर्ण हो जाते हैं। परन्तु समय के साथ तृष्णा जवान होती जाती है।

तृष्णा हि सर्वपापिष्ठा नित्योद्वेगकरी मता।
अधर्मबहुला चैव घोररूपानुबंधिनि।।
या दुस्त्यजा दुर्मतिभिर्या न जीर्यति जीर्यतः।
यासौ प्राणांतिको रोगस्तां तृष्णां त्यजतः सुखम्।।
अनाद्यंता तु सा तृष्णा ह्यन्तर्देहगता नृणाम्।
विनाशयति संभूता लोहं लोहमलो यथा।।

(स्कन्दमहापुराणम्-माहेश्वरखण्ड-कौमारिकाखण्ड 46/40-42)

तृष्णा सबसे बढ़कर पापिष्ठ और सदा उद्वेग में डालनेवाली मानी गयी है। इसके द्वारा बहुत से अधर्म होते हैं। तृष्णा का रूप भी बड़ा भयंकर है। वह सबके मन को बाँधनेवाली है। खोटी बुद्धिवाले पुरुषों के द्वारा बड़ी कठिनाई से जिसका त्याग हो पाता है, जो इस शरीर के वृद्ध होनेपर भी स्वयं बूढ़ी नहीं होती तथा जो प्राणांतकारी रोग के समान है, उस तृष्णा का त्याग करनेवाले को ही सुख मिलता है। तृष्णा का आदि और अन्त नहीं है। जैसे लोहे की मैल लोहे का नाश करती है, उसी प्रकार तृष्णा मनुष्यों के शरीर के भीतर रहकर उनका विनाश करती है।